गोरख पाण्डेय

चोर-चोर मौसेरे भाई

चोर-चोर मौसेरे भाई
एक चोर ने भैंस चुराई
नालिस हुई, अदालत बैठी
जाँच करो फौरन
फरमान निकाला
थाना दौड़ा, फाइल दौड़ी
शुरू हुआ सब गड़बड़झाला।
बहस, गवाही हुई
और फैसला सुनाया
इसको तो भैंस ही नहीं थी
फिर उसने कब भैंस चुराई
चोर-चोर मौसेरे भाई।

शिवनारायण गौर

छपका दादा

छपका दादा का यह नाम छपका दादा कैसे पड़ा गया, पता नहीं! उनके गले में सोने के ताबीज़ों का हार लटकता रहता। ठिगने कद के छपका दादा अँगूठी भी पहनते थे। उनके सामने के दो दाँत गायब थे। बगल में ट्रांज़िस्टर चिपकाए वे दिन भर गाँव में घूमते रहते। यूँ तो उन्हें घड़ी देखना नहीं आता था पर उनके हाथ में घड़ी ज़रूर बँधी रहती।

छपका दादा कोई दो सौ घरों वाले एक गाँव में रहते थे। सड़क किनारे होने के कारण दिन भर आसपास के गाँवों के लोगों का आना-जाना लगा रहता। छपका दादा को कौन नहीं जानता था? वे थे ही इतने अनूठे!

सफेद कुर्ते की सामने वाली जेब में वे एक सौ का नोट ज़रूर रखते। कभी-कभी वे इसे ऐसा रखते कि वह जेब से थोड़ा बाहर लटकता दिखे। उन्हें अच्छा लगता जब कोई नोट को अन्दर करने को कहता। गाँव में किराने की एक ही दुकान थी। यह दुकान छपका दादा की प्रमुख बैठक हुआ करती। वे इस दुकान के दिन में कई चक्कर लगा जाते। खासकर तब जब दुकान में भीड़भाड़ हो। वे सामान नहीं खरीदते बस सौ के नोट को दिखाकर उसके खुल्ले माँगा करते। खुल्ले मिल गए तो मिल गए वरना सौ का नोट लोगों को दिखाने की उनकी इच्छा तो पूरी हो ही जाती। खुल्ले पैसे मिल जाते तो उन्हें फिर से बँधवाने के लिए भीड़ का इन्तज़ार करने लगते। खुल्ले-बँधे का यह काम दिनभर चलता रहता। किसी से मामूली-सा भी झगड़ा हो जाता तो वे कहते, "संगाबाद (होशंगाबाद) तक नोटों की लेन लगा दूँगा। तूने का समझा है।"

ट्रांज़िस्टर सुनने के शौक के चलते एक ट्रांज़िस्टर हमेशा उनके साथ रहता। एक बार वे बड़े दुखी थे। जब वे अपनी पीड़ा को रोक नहीं पाए तो कारण बताया, "भैया जबसे ये रेडियो सुधरने के लिए गया है तबसे इस पर 'झूठ बोले कौआ काटे गाना' आना बन्द हो गया। लगता है सुधारने वाले ने ये गाना निकाल लिया है। कोई तरकीब बताओ जिससे यह गाना फिर से बजने लगे।"

आज छपका दादा नहीं है लेकिन उनके अनूठेपन को लोग आज भी याद करते हैं। चक मक